आरती श्री राम जन्म की

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी
हरषित महतारी मुनि मनहारी अद्भुत रूप बिचारी ।
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी।
भूषण बनमाला नयन विशाला शोभा सिंधु खरारी ।
कह दुइ कर जोरी स्तुति तोरी केहि विधि करौं अनन्ता ।
माया गुन ग्यानानीत अमाना वेद पुराण भनन्ता ।
करुणा सुखसागर सब गुन आगर जेहिं गावहिं श्रुतिसन्ता ।
सो मम हितलागी, जन अनुरागी, भये प्रगट श्रीकन्ता ।
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोमरोम प्रति वेद कहै ।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै।
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुस्काना चरित बहुत विधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सु हाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै शिशुलीला अति प्रियशीला यह सुख परम अनूपा ।
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भव कूपा ।

विप्र धेनु सुर सन्त हित, लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तन, माया गुण गोपार ।।

विवरण

माता कौशल्या का हित करने वाले, गरीबों पर दया करने वाले, सब पर कृपा करने वाले श्री राम जी प्रगट हुए हैं । इनका अद्भुत रूप देखकर मुनियों का मन मोहित हुआ जा रहा है तथा इनकी माता का मन आनन्द से हर्षित हुआ जा रहा है ।

इनकी बड़ी - बड़ी सुन्दर आँखें मनोहर हैं, घने श्याम वर्ण का शरीर

एवं इनके चारों भुजाओ में शस्त्र (शंख, चक्र गदा आदि), आभूषणों से सुसज्जित माला पहने हुए एवं विशाल नेत्र तथा निश्छल सागर के समान दुष्ट दमन करता इनका रूप देखकर माता कौशल्या दोनों हाथ जोड़कर कहने लगी कि हे अनन्त (जिनका कहीं अन्त नहीं है) भगवान ! मैं आपकी स्तुति किस प्रकार करूँ ? आपकी तो माया, गुण एवं ज्ञान की वेद और पुराण आपका बखान करते हैं। आप सुख एवं करूणा के सागर हैं,सर्वगुण सम्पन्न हैं,आप को सन्त लोग भजते भी हैं एवं आपकी गाथा श्रवण भी करते हैं, ऐसे हमारा हित करने वाला एवं सम्पूर्ण जग के प्रेमी श्री राम जी प्रगट हुए हैं।

जो पूरे संसार के हृदय हैं, जिन्होंने खुद माया - मोह को बनाया है, जिनके रोम - रोम का वर्णन वेद की वाणी कहती है, ऐसे श्री राम जी हमारे हृदय में ही बसते हैं इनकी वाणी सुनकर हमारा मन अस्थिर हो गया है, धीरज खत्म हो गया है । श्री राम जी ने जब अपने माता के मुख से अनेक प्रकार के अपने चरित्र का बखान सुन लिये तो प्रभु श्री राम जी मुस्कुराने लगे एवं जिस प्रकार पुत्र माँ को समझाता है, उसी तरह श्रीराम जी अपनी माता कौशल्या को कथा कह कर समझाने लगे ।

कौशल्या माँ कहने लगीं कि हे पुत्र ! आपको मैं इस रूप में कैसे अपना पुत्र मान पाऊँगी ? आप शिशु बनकर प्रिय लीला कीजिए तभी हमे परम सुख की अनुभूति होगी । अपनी माता के मुख से यह वचन सुनकर तुरन्त श्री राम जी राजा दशरथ के छोटे से बालक बन गये एवं रोने लगे।

श्री राम जी का यह चरित्र जो भी गाता है, वह श्री हरि के पद को प्राप्त कर लेता है एवं जन्म - मरण रूपी इस दुनिया में कभी नही आता है । ब्राह्मण, गाय, देवता एवं सन्त जन का हित करने के लिए भगवान ने मनुज का अवतार लिया। अपनी इच्छा से अपने शरीर का रूप धारण करने वाले इन प्रभु की माया एवं गुण अपार हैं।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.